डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

शिकार आरो शिकारी

शिकार आरो शिकारी

शिकार आरो शिकारी

उर्दू बाल-उपन्यास केरों अंगिका रूपान्तर

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

अंगिका अनुवाद

डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक

एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस

३१०८, वकील स्ट्रीट, कूचा पंडित

लाल कुँआ, दिल्ली-११०००६

पुस्तक : शिकार आरो शिकारी
लेखक : डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
अंगिका अनुवाद : डॉ. अमरेन्द्र
संरक्षक : मुजतबा खां
संस्करण : ई. २००६
मूल्य : ३० रुपये
मुद्रक : अफीफ ऑफसेट प्रिंटर्स, नयी दिल्ली-६

पुस्तक मिलने के पते

- एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, ३१०८, वकील स्ट्रीट, कूचा पंडित, लाल कुँआ, दिल्ली-११०००६
- कोहसार, भीखनपुर-३, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)
- कामायनी, लाल खां दरगाह लेन, सराय, भागलपुर-८१२००१ (बिहार)

SHIKAR ARO SHIKAREE By Dr. Manazir Ashiq Harganvi
ANGIKA TRANSLATION By Dr. Amrendra

ई अनुवाद-कृति
आपनों ऊ सब मित्र-अमित्र कें समर्पित
जे हमरों झुट्ठे शिकायत में
आपनों कीमती समय बर्बाद करै छै ।

—अमरेन्द्र

शिकार आरो शिकारी

खालिक चा गजब के शिकारी छै ।
देखैहौ में शिकारिये हेनों लागै छै ।
भारी भरकम देह, होने आवाज, छोटों मतरकि घन्नों दाढ़ी आरो आँखी पर चश्मा ।
हुनकों नगीच बैठों आरो शिकार के जिकिर छेड़ी दौ, फेनू नी देखौ—केन्हेंा-केन्हों अनुभव बोलतें चलै छौं ।
हालांकि हुनकों पेशा तें वकिलाये छेकै, मतरकि हुनकों असल शौक शिकारे छेकै ।
खालिक चां अकसराहै आपनों शिकारी जिनगी रों कहानी हमरा सुनैलें छै । दू, एक दाफी हम्मू हुनकों साथें शिकार पर गेलों छियै । पहलों दाफी शिकार पर जैवों हमरा बड़ी दिलचस्प बुझैलों छेलै ।
एक दिन पहिले योजना बनलै कि हरिण आकि नील रों शिकार करलों जाय । खालिक चा के एक मोकिले जानकारी देलें छेलै कि धन्वां-मन्वां तंगल के नगीच जे गांव बसलों छै, वहांकरों खेतों में हरिण आरो नील घुसी आवै छै आरो फसल बर्बाद करी दै छै, जेकरे कारण किसान सिनी बड्डी परेशान रहै छै ।

आखिर चाचां योजना बनैये लेलकै । दू जीप रों इन्तजाम करलों गेलै । कलैवों साथें राखी लेलों गेलै । चाचां तें आपनों बन्दूक लेबे करलकै, अवधेश सिंह सें कहलकै कि हुनी आपनों बन्दूक लै लौ । धनंजय मिसिर, शशिभूषण सिंह, उमेश राय, मिथिलेश झा, मजोज दास, खुशीलाल आरो दू एकटा लोग दोनों जीपों पर सवार होय गेलै । हम्में खालिक चा के साथें बैठलौं ।

ठीक तीन बजें शाम कें हमरा सिनी बतैलों गेलों गाँव पहुँचलां । मुखिया आरो सरपंचों कें बुलैलों गेलै । हुनका सिनीं चाय, पानी सें आदर सत्कार तें करवे करलकै, साथे साथ ऊ खेतों सिनी कें देखलैलकै, जहाँ राती में ढेरे हरिण आरो नील आवै आरो फसल चट करी जाय ।

चाचां संझकी नमाज पढ़लकै आरो तीन चार गो मजदूर साथें लै लेलकै । फेनू हमरा सिनी रवाना हो गेलियै—पैदले बढ़तें रहलियै, आरो खेतों सें आगू जंगल के किनारी पहुंची गेलियै ।

चाचां दू-तीन रस्ता कें ध्यानी में राखलकै कि हिरण आरो नील यहें सिनी रास्ता दै कें ऐतें होतै । फेनू एकटा मोनासिब जग्घों देखी कें वहीं ठां मोर्चा संभाली लेलकै । वैठां सें जंगल के रास्ता पर नजर राखलों जावें सकै छेलै आरो खेतो ठो दिखाय पड़ै छेलै । संयोगों सें चाँदो निकली ऐलों छेलै आरो चाँदनी फैललों जाय छेलै ।

मोरचा संभालतैं चाचां हमरा सिनी कें मना करी देलें छेलै कि केकरो मुंहों सें नै तें कोय किसिम के आवाज निकलें आरो नै कोय बीड़ी आकि सिगरेट पीएँ ।

वक्त गुजरतें गेलै । हमरा सिनी इन्तजार करतें रहलियै । चाँदनिये में देखलियै—घड़ी दस बजाय रहलों छेलै ।

तभिये आहट बुझैलै । फेनू हेनों लागलै, जेना ढेरे जानवर एक्के साथें चली रहलों छै । चाचा फुसफुसैलै, ''शिकार आवी रहलों छै । दम साधी कें बैठों।'' आरो देखथैं-देखथैं जंगल सें निकली कें तीन नील खेतों दिश बढ़लै।

हम्में देखलियै, चाचां बन्दूक तानी लेलें छै । बन्दूक के दोनो नली में गोली पहिलें सें डाली लेलें छेलै । फेनू हुनी बन्दूक रों कुन्दा आपनों दायां सीना सें लगैलकै । एक आँख मुनी कें शिकार कें निशाना पर लैलकै आरो बन्दूक के लबलबी दबाय देलकै । 'धांय' के आवाज होलै आरो हमरा सिनी

देखलियै कि चौकड़ी भरतें तीनो नील जंगल दिश भागी गेलै । खालिक चां दोसरों गोली चलाय लें चाहलकै, मतरकि ओकरों मौकाहै नै मिललै ।

हमरा सिनी बड्डी उदास होय गेलियै, मतर चाचां कहलकै, ''नील कें गोली जरूरे लागलों छै, ओकरों निशाना अचूक नै गेलों छै ।''

यहें विश्वास आरो अविश्वास रों हालत में चचां ऊ जग्घों पहुँचलै जहाँ नील छेलै । चोरबत्ती के रोशनी जमीन पर देलों गेलै तें, वहां खून गिरलों मिललै । जरूरे गोली लागलों छै आरो एक ठो जख्मियो होलों छै । ई सुनत्हैं हमरा सिनी में जोश भरी उठलै । चचां कहलकै, ''आबें यहें खून के सहारा हम्में आगू बढ़वै । घायल नील बहुत दूर नै जावें सकें । ऊ जरूरे नगीच के कोय झाड़ी में छिपलों होतै । ई ओकरों स्वभाव छेकै'' आरो हमरा सिनी जंगल में दाखिल होय गेलियै । मजकि जल्दिये खून रों धब्बो गायब होय गेलै । हुन्नें झाड़ी आरो पत्तो सिनी मिली कें घायल नील के खोज के रस्ता खतम करी देलें छेलै ।

चचां अवधेश सिंह सें कहलकै कि एक मील रों सीमाना में ऊ दोसरों रास्ता सें विपरीत दिशा में जाय । दू मजदूर आरो तीन लोगो हुनकों साथ होय जाय । हिन्नें सें तोरा सिनी हमरों दिश बढ़ों आरो हम्में हुन्नें सें तोरा सिनी दिश बढवौं । घायल नील जरूरे झाड़ी में छुपी कें बैठलों होतै ।

हम्में खालिक चा के साथें रही गेलियै । शशिभूषण आरो उमेश राय जहांगीरो दू मजदूरों साथें हमरे सिनी के साथ चली रहलों छेलै ।

अभी हमरा सिनी कुछुवे कदम आगू बढ़लों छेलियै कि हमरों साथ चली रहलों एक मजदूर के मूँ सें आवाज निकललै, ''अरे बाप रे !'' आरो एकरे साथ ऊ जमीन पर लोटें लागलै । एक हाथ सें वैं आपनों बायां गोड़ पकड़लें होलों छेलै । हमरा सिनी ओकरों दिश मुड़लियै । चचा सबसें आगू छेलै आरो एक ठो मजदूर चोरबत्ती लेनें हुनकों साथें चली रहलों छेलै । चोरबत्ती के रोशनी में देखलों गेलै तें देखलकै कि एक मोटों लम्बा रं कारों बिच्छू भागलों जाय रहलों छेलै । यही बिच्छू मजदूरों कें डंक मारलें छेलै । हमरा सिनी बिच्छू के पीछू लपकलियै आरो चचा मजदूर के नगीच बैठी कें फूक मारें लागलै । हुनी ओकरों घाव पर अंगुलियो फेरी रहलों छेलै । आरो ठीक तीने चार मिनट के बाद हमरा सिनी आचरज भरलों दृश्य देखलियै । ऊ मजदूर एकदम ठीक होय गेलों छेलै आरो आगू बढ़ै वास्तें तैयार छेलै ।

हमरा सिनी आगू बढ़ी गेलियै ।

मतरकि हमरों सब्भे टा ध्यान मजदूरे सिनी पर छेलै, कैन्हें कि हम्में बिच्छू के बारे में बहुत्ते कुछ पढ़लें छेलियै । जेना कि बिच्छू केरों ताल्लुक आठ टांगवाला पिपरी या हेने कीड़ा-मकौड़ा के जाति सें छै, जैमें सबसें अलग किसिम के आरो जहरीला काला बिच्छू होय छै । आम बिच्छू तें मटियैन्नों रंगों के होय छै । ओकरों मूँ सटलों, आगू में दू सब्बड़, ताकतवाला, शिकंजा नांखी सूढ़ होय छै, जेकरा वैं हमेशे बरछी नांखी आगूवे-आगू बानलें राखै छै । ई दोनों सूंग गोहरा मछली के टांगों सें बहुते कुछ मिलै-जुलै छै । बिच्छू रों देह दू हिस्सा में बंटलों रहै छै—अगुलका हिस्सा और पिछुलका हिस्सा । एकरै अंग्रेजी में सेफालोथेरेकस आकि प्रोसामा भी कहलों जाय छै, जबें कि पिछुलका कें एबडोमेन या ओपिसथोसोमा कहलों जाय छै । अगुलका हिस्सा ओकरों सिर के ओरी से सीना सें जुड़लों रहै छै, जैमें सात हल्का नुमा भाग होय छै, जबें कि स्किम के पिछुलका हिस्सा कुछ-कुछ टुकड़ानुमा खंडों में बंटलों रहै छै । स्किम के पिछुलके हिस्सै में ओकरों दुम भी होय छै, जेकरों आखरी हिस्सा पर विष के एक छोटों रं थैलियो होय छै । ऊ थैली के मुँहों पर एक कड़ा, पेचीदा आरो नोकनी वाला काँटा होय छै, जेकरै डंक कहलों जाय छै । डंक के झुकाव कुछ हेनों होय छै कि जब तांय बिच्छू पिछुलका हिस्सा कें ऊपर नै उठावें, डंक काम नै करै छै । बिच्छू के डंक में एक छोटों रं भुरकी होय छै, जेकरे जरिया सें यै शिकार के शरीर में आपनों जहर दाखिल कराय देलकों । विष के खजाना पुछड़ी के आखिरलका हिस्सा में रहै छै । अगुलका हिस्सा में दू सें लै कें पांच आरू कभी-कभी आठो तक आँख होय छै । ओकरों मुंह मादा के दिश अगला या पिछुलका ठोरों के दरम्यान होय दै । ओकरों मूं के आगू जे दू आजा शिकंजा नांखी हुऐ छै, ओकरे जरिया यैं आपनों खुराक तलाशतें रहै छै । टांग के पहिलें प्लेट के शकल के चार जोड़ा होय छै आरो वैमें ग्लैनडूलर भाग हेनों होय छै, जेकरा सें ओकरों पाचन के व्यवस्था दुरूस्त रहै छै । छोटों-मोटों कीड़ा मकौड़ा बिच्छू के रूचिकर भोजन छेकै । एतनै नै, पिपरी आरो घास-पतार में पैलों जाय वाला नान्हों-नान्हों कीड़ो एकरों रूचिकर भोजन छेकै । बिच्छू उपवासों के अभ्यस्त होय छै । एक अन्दाज के मोताबिक एक ठो बिच्छू बिना खोराके के सालो भरी जिन्दा रहें सकै छै । बिच्छू रों देखै सुनै रों शक्ति बड्डी कमजोर

होय छै । ऊ केकरो आवाज आपनोॅ गोड़ोॅ के जरियाहै सें सुनै छै, कैन्हें कि ओकरा कान नै होय छै । बनावटियो बिच्छू हुएॅ पारेॅ । एकरोॅ लेॅ दिलचस्प आरो आसान तरीका ई छेकै कि थोड़ा टा गोबर आरो दही मिलाय केॅ ओकरोॅ एकटा बर्तन में राखी देलोॅ जाय । फेनू ऊ बर्तन के मूं ठीक ढंग सें बन्द करी आकरा गोबरोॅ के ढेरी में गाड़ी देलोॅ जाय । एक हफ्ता बादे ऊ बर्तन केॅ निकाली लेलोॅ जाय तेॅ खोललो पर देखलोॅ जावेॅ सकै छै कि ऊ बर्तन बिच्छू सिनी सें भरलोॅ छै ।

हमरोॅ दिमाग मजदूर आरो बिच्छू में उलझी केॅ रही गेलोॅ छेलै । मजदूर के ठीक होवोॅ हमरा लेॅ कोय घटना सें कम नै छेलै ।

फेनू हेनोॅ होलै कि जखमी नीलो नजर आवी गेलै । चाचाहैं ओकरा पर गोली चलैलकै आरो शिकार हमरोॅ हाथ लगी गेलै । फेनू की छेलै, मजदूर सिनी के मदद सें शिकार केॅ जीप पर लदवैलोॅ गेलै आरो वापसी वास्तें निकली गेलियै । रास्ता में हमरा सें रहलोॅ नै गेलै । हम्में चाचा सें पूछलियै कि आखिर मजदूर एत्तेॅ जल्दी केना ठीक होय गेलै ।

पहिले तेॅ चचां टारै के कोशिश करलकै, मजकि जबेॅ सब्भे लोगें पूछताछ शुरू करी देलकै तेॅ, हुनी बतैलकै कि कुरान शरीफ के आयात पढ़ी केॅ फूक मारी रहलोॅ छेलियै आरो अंगुली यै लेली फेरी रहलोॅ छेलियै कि हमरोॅ अंगुली में एत्तेॅ तासीर छै कि विषो उतारी केॅ राखी देॅ । ई तासीर तेॅ तोरो सिनी आपना में पैदा करेॅ सकै छोॅ । आमोॅ के गाछी में जबेॅ खूब मंजर आवी जाय तेॅ शुरुआतिये दिनोॅ में मंजर तोड़ी केॅ कुच्छू देर वास्तें अंगुली सिनी सें मलतें रहोॅ, एत्है देर कि मंजर के रस अंगुली सिनी सोखी लेॅ । तीन दिनोॅ तक ई अभ्यास केॅ दुहरैतें रहौ । फेनू की छै, एक साल लेली तोरोॅ अंगुली में एत्तेॅ तासीर पैदा होय जैतौं कि बिच्छू के काटलोॅ जग्घा पर तोहें हाथ फेरी दौ—ओकरोॅ विष निकली जैतै आरो ऊ कुछुवे देरी में चंगा होय जैतै ।

चाचा हर साल आम के मंजरी मसलै वाला अभ्यास दुहरैतें रहै छै, यै लेली हुनकोॅ अंगुली सिनी में एत्तेॅ असर आवी गेलोॅ छेलै, जेकरोॅ नमूना हम्में खुद्दे आपनोॅ आंखी सें कुछ देर पहिलें देखी चुकलोॅ छेलियै ।

ई चमत्कार नै छेलै तेॅ आरो की छेलै ।

एक मुलाकात में खालिक चचां चीता के बारे में बतैलकै कि चीता बड्डी खूबसूरत, दिलेर, निडर, मजकि मक्कार आरो दरिन्दा जानवर होय छै । ओकरों कद-काठी तें शेरनिये रं होय छै, मतरकि ई मक्कारी में शेरों सें बढ़िये कें होय छै । फेनू एकरों रंगो ओकरों माहौल सें मेल खाय छै । जबें ई पेट रों बलें लेटी कें आपनों शिकार पर घात लगाबै छै तें बनी जाय छै। यही कारण छेकै कि शिकार आसानी सें धोखा खाय जाय छै । जबें ई शिकार के घात में लेटलों रहै छै, तखनी ओकरों चेहरा एक हद तांय बड्डी भयावह बनी जाय छै । चीता कें जबें आदमी के मांस के चस्का लागी जाय छै, तबें ऊ घरो में घुसी कें हमला करें लागै छै ।

खालिक चाचां कहलकै कि हम्में दू किसिम के चीता देखलें छियै । शेर जेन्हों लम्बा आरो ऊच्चों सात फीट तक के, जे कि आबादी दिश कम्मे आवै छै । ज्यादातर तें ई घन्ने जंगलों में पैलों जाय छै आरो घन्ने जंगलों में शेरे नांखी हिरण, चीतल आरनी के शिकार करै छै ।

दोसरों किस्म के छोटों चीता आपनों दिलेरी आरो मक्कारी लेली बड़ी नामी होय छै । ई किसिम के चीता बस्ती के निकट झाड़-झंकार साथें पहाड़ी के गुफो में रहै छै आरो बकरी, कुत्ता, भेंड़ आरनी के शिकार सें आपनों पेट पालै छै ।

चीता गाछ पर बड्डी आसानी सें चढ़ें पारै छै । ज्यादातर तें गाछिये पर चढ़ी कें आपनों शिकार के तलाश करै छै, कैन्हें कि यै तरीका सें जंगल के एक बड़का हिस्सा ओकरा दिखाय पड़ै छै । आरो जेन्हैं शिकार पर ओकरों नजर पड़ै छै, ऊ तेजी के साथें गाछी सें उतरी पड़ै छै आरो घात में लगी जाय छै । फेनू शिकार करला आरो खैला के बाद जे हिस्सा बची जाय छै, ओकरा घसीटतें हुएँ कोय सुरक्षित जग्घा में लै जाय कें पत्ता सिनी सें ढकी दै छै । ताकि फेनू आवी कें खावें सकें ।

होना कें तें चीता बड़ी निडर जानवर होय छै । जंगल में शायते कोय जानवर होय छै, जेकरा सें ई डरै छै, मजकि जों कोय जंगली कुत्ता सें सामना होय जाय तें, मौत जना ओकरों आँखी लुग घूमतें नजर आवै छै । जंगली कुत्ता कें देखथैं ई फुर्त्ती सें गाछी पर चढ़ी जाय छै आरो झबरलों डाली पर छुपी कें बैठी जाय छै । हेनों नै करें तें, जंगली कुत्तां ओकरों बोटी-बोटी

नोची कें खाय जाय । यही कारण छै कि शेर आरो दूसरों जंगली जानवर जंगली कुत्ता सें दूरे भागै छै ।

खालिक चाचां बतैलकै कि एक दिन जंगल सें कैम्प वापिस आवी रहलों छेलियै कि रास्ता में सड़क के किनारी एक गाछी के नीचू कुछ जंगली कुत्ता कें हुनी देखलकै, जे सिनी आपनों मुंह ऊपर उठैनें गाछी के उपरलका हिस्सा देखी रहलों छेलै । पहले तें चाचा कें हैरत होलै । फेनू हौले-हौले चलतें होलें कुत्ता सिनी के पीछू पहुँची गेलै । मजकि तभियो ऊ सिनी के ध्यान में कोय फरक नै पड़लै । चाचां निशान बांधी कें ऊ सिनी पर फायर करी देलकै, जेकरा सें दू कुत्ता तें वहीं ढेर होय गेलै, बाकी सब लगे उड़ौन दै देलकै । खालिक चाचां जानै छेलै कि हौ कुत्ता सिनी मरलों कुत्ता कें खाय लें जरूरे ऐतै । यै लेली हुनी ऊ सब के इन्तजार करतें रहलै । कुछ देर गुजरलों नै होतै कि हौ कुत्ता सिनी फेनू लौटी ऐलै । चाचां दोबारा फायर करलकै । ई दाफी एक कुत्ता मरलै आरो बाकी सब फेनू लगे उड़ौन होय गेलै। आरो हेनों भागलै कि फेनू घुरी कें नै ऐलै ।

आबें चाचां गाछी के नगीच पहुँची कुत्ता सिनी कें आकर्षण के राज जानै वास्तें गाछ के झबरलों डाली दिश नजर दौड़ैलकै आरो ई देखी कें हुनका बहुत्ते आचरजो नै होलै कि वहाँ एक ठो चीता छुपलों बैठलों छेलै । हेनों खतरनाक स्थिति में ओकरों वास्तें यहें सुरक्षित जग्घों होय छै ।

एक दाफी के बात छेकै । शाम के वक्त छेलै । कन्धा पर बन्दूक रखलें खालिक चाचा शिकार के गरज सें जंगल में सड़क के किनारी-किनारी हौले-होले चललों जाय रहलों छेलै कि तभिये जंगली मुर्गा केरों झुण्ड जमीन पर कुछ चुगतें हुएँ नजर ऐलै । अभी हुनी ऊ झुण्ड कें देखिये रहलों छेलै कि एक मुर्गा एक अजीबे अन्दाज में बांग देलकै कि तभिये हुनकों नजर झाड़ी के पीछू छोटों नस्ल के एक चीता पर गेलै, जे मुर्गा सिनी दिश हौले-हौले बढ़ी रहलों छेलै । घात लगैतें लगैतें आखरी में चीता मुर्गा के झुण्ड लुग पहुँचिये गेलै, मजकि मुर्गा रों झुण्डें ओकरा देखी लेलें छेलै, यही लें सब एक्के साथ उड़ना शुरू करी देलकै । ऊ वक्ती चीतां एक छलांग लगैलकै आरो एक मुर्गा मारी गिरैलकै । फेनू दोसरों छलांग में दू मुर्गा दबोचतें झाड़ी में गुम हाय गेलै ।

खालिक चां एकठो आरो तजुरबा बतैलकै कि संझा के लगभग पाँच

बजे के समय होतै । गाँव के मकान सिनी रों द्वार अभी खुल्ले छेलै । जंगल के करीब के एक मकान में एक बूढ़ा चारपाई पर बैठलों हुक्का गुड़गुड़ाय रहलों छेलै आरो भनसाघरों में ओकरों दू जवान बेटी खाना पकाय रहलों छेलै । बूढ़ा के जवान बेटा मकान के भीतरी कोठरी में कुछु काम करी रहलों छेलै कि तखनिये एकाएक घात लगैनें एक ठो आदमखोर चीता दालान में घुसी ऐलै । संयोग सें बूढ़ा के नजर चीता पर पड़लै । ऊ चुप्पेचाप चारपाई सें उतरलै आरो खटिया कें खड़ा करी ओकरों आड़ों में खड़ा होय गेलै ।

हुन्नें लड़कियौं चीता कें देखी लेलें छेलै । पहिलें तें वैं आपस में कुछु इशारा करलकै, फेनू आपनों-आपनों दुपट्टा हाथों में लेलें चुप्पेचाप चीता के पीछू दिश बढ़ें लागलै ।

हिन्नें चीता बूढ़ा के खटिया पर नजर गड़ैनें आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ी रहलों छेलै आरो नगीच आवी कें जबें वैं खड़ा खटिया सें झुकी कें बूढ़ा कें देखै लें चाहलकै कि तभिये दोनों लड़कीं, जे इखनी तक चीता के पीछू एकदम नगीच आवी गेलों छेलै, आपनों-आपनों दुपट्टा सें ओकरों मुँह लपेटी लेलकै आरो शोर मचैवों शुरू करी देलकै । आवाज सुनथैं लड़को कोठरी सें निकली ऐलै आरो दुपट्टा में ओझरैलों चीता के मूड़ी पर लाठी बरसैवों शुरू करी देलकै ।

आखिर में चीता वहीं पर ढेर होय गेलै । बाद में पता चललै कि ऊ आदमखोर चीता करीब दस आदमी कें आपनों कलौवों बनाय चुकलों छेलै।

खालिक चाचा पेशेवर शिकारी नै छेकात, बस शौकिया शिकार खेलतें रहलात । मजकि हुनकों पास हेनों-हेनों तजुरबा छै कि अक्ल हैरान रही जाय ।

चीता सें जुड़लों आपनों यादाश्त कें कुरेदतें चाचां एक दाफी बतैलकै कि जबें हुनकों उमिर पच्चीस, छब्बीस सालों के छेलै, तभिये के बात छेकै । हुनी आपनों एक अंग्रेज दोस्त के पास धन्वा-मन्वा के जंगल गेलै, जे

अंग्रेज मित्र वही कैम्प करलें होलों छेलै । चाचां आपनों साथ एक बन्दूक आरो नौकरो साथ लै लेलें छेलै । होना कें हुनी बड़े शिकार लें निकललों छेलै, मजकि मुँह के मजा बदलै लेली छोटों-मोटों जानवरों के शिकार करी लै । जत्तें दिन हुनी जंगल में रहलै, हुनकों रात वहाँ बितलै ।

एक दिन हुनी थकलों-मांदलों आपनों कैम्प में बैठलों छेलै कि एक मजदूर चीखतें चिल्लैतें वहाँ ऐलै । ऐत्हैं जमीन पर बैठी कें ऊ कानें लागलै। ओकरों बात समझै के ख्यालों सें अंग्रेज दोस्तें चाचा दिश देखलकै ।

मजदूरें बतैलकै कि ओकरों भैंस जंगल के नगीच चरी रहलों छेलै कि चीतां हमला करी ओकरा मारी देलें छेलै । आबें ऊ प्रार्थना करै लें ऐलों छै कि हौ चीता कें मारी देलों जाय ।

चाचां आपनों अंग्रेज दोस्त सें ऊ चीता के शिकार पर निकलै खातिर इजाजत लेलकै । चाचां आपनों नौकर आपनों साथ लेलकै आरो मजदूर कें रस्ता दिखैतैं जाय लें कहलकै । हुनी पहिलें आपनों आँखी सें ऊ जग्घों कें देखै लें चाहै छेलै, जहाँ चीतां भैंस पर हमला करलें छेलै ।

एक्के घण्टा में हुनका सिनी हौ जग्घा पर पहुँची गेलै । ई जग्घों तराई में छेलै आरो ओकरों दोनों दिश ढलवान छेलै । हौ ढलवानों पर छोटों-छोटों पौधा सिनी छितरलों छेलै । तेसरों दिश जंगल छेलै, जहाँ लम्बा-लम्बा घास उगलों होलों छेलै आरो ठामें बंसबिट्टी तरें मरलों भैंस सामनाहै पड़लों छेलै । भैंस पर गहरा जखम छेलै आरो खून जमी चुकलों छेलै । चाचां देखलकै कि भैंस रों गल्ला पर चीता के नुकीला दाँतों के गहरा निशान छेलै ।

नौकरें कहलकै, ''राती ऊ चीता भैंस के माँस खाय लें जरूरे ऐतै; चीता आपनों शिकार मारी कें चल्लों जाय छै आरो राती लौटला पर खाय छै ।''

''तबें हम्में अइये ओकरों शिकार करवै'' चचां कहलकै, ''तोहें सबटा इन्तजाम कर ।'' ई कही हुनी कैम्प लौटी ऐलै ।

जबें तैयारी एकदम सें पूरा होय गेलै तबें चाचा आपनों बन्दूक आरो अंगरेज दोस्त के राइफल लै कें जंगल पहुँचलै । एकठो चट्टान पर हुनका सिनी के बैठै के इन्तजाम करलों गेलै । ई जग्घों ढलान के एकदम नगीच छेलै आरो वहाँ सें भैंस के मरी चालीस-पचास हाथों के दूरी पर छेलै।

तखनी जंगल में चारो ओर चाँदनी फैली चुकलोॅ छेलै । खालिक चाचा एकदम चौकन्ना होलोॅ बैठलोॅ छेलै । आहिस्ता-आहिस्ता जंगल रोॅ सन्नाटा बढ़ेॅ लागलोॅ छेलै ।

अभी ज्यादा देर गुजरलोॅ नै होतै कि आहट रं होलै । चाचां चोरबत्ती के रोशनी में देखलकै—एक गीदड़ माँस के टुकड़ा मुँहोॅ में दबैनें बढ़ी रहलोॅ छेलै । बिला शक ऊ भैंसे के मांस नोची केॅ भागलोॅ छेलै ।

एकरोॅ बाद आधोॅ घण्टा तांय एकदम सें सन्नाटा बनलोॅ रहलै ।

कि एकाएक चाचा केॅ अनुभव होलै, कि भैंस के नगीच केरोॅ लम्बा घास हिली रहलोॅ छै । हेनोॅ आवाजो ऐलै, जेना कोय जानवर भैंस के मरी केॅ खींची रहलोॅ रहेॅ । चचा के दिल रोॅ धड़कन तेज होय गेलै । हुनी रायफल संभाली केॅ चोरबत्ती के रोशनी फेंकलकै । मतरकि हौ चीता नै छेलै, एकठो बड़की जंगली बिल्ली—भैंस केॅ नोचवो करी रहलोॅ छेलै ।

एक घण्टा आरो गुजरी गेलै । आबेॅ चाचा थकेॅ लागलोॅ छेलै आरो कैम्प लौटी केॅ आराम करै लेॅ चाहै छेलै । हुनी अभी खड़ा होले छेलै कि एकाएक ठिठकी पड़लै । सामनाहै चीता आपनोॅ फैललोॅ चमकीला आँखी सें चारो दिश देखी रहलोॅ छेलै । आरो ओकरोॅ नजर चाचा पर जमी गेलै । चाचा के माथा पर टोपी छेलै । हुनी साँस रोकी केॅ खड़ा रहलै ताकि चीता केॅ कोय शक नै हुएॅ सकेॅ कि वहाँ कोय इन्सान छुपलोॅ होलोॅ छै । चीता काफी देर तांय हुनकोॅ टोपी दिश देखतें रहलै । आरो जबेॅ ओकरा विश्वास होय गेलै कि टोपी सें कोय नुकसान नै पहुँचै वाला छै तेॅ, ऊ बेखौफ होय आगू दिश बढ़लै आरो भैंस के मरी केॅ खावेॅ लागलै । चाचा वास्तें ई मौका अच्छा छेलै । हुनी रायफल उठाय केॅ निशाना बांधलकै आरो चीता के मुड़ी ऊपर उठाय के इन्तजार करेॅ लागलै । कुछुवे देर बाद चीतां मूड़ी उठैलकै कि चचां लबली दबाय देलकै ।

लेकिन फायर नै होलै । रायफल सें एकटा सिसकी रं आवाज निकली केॅ रही गेलै । असल में गलती चाचाहै के छेलै । हुनी रायफल केॅ ठीक ढंग सें बन्द नै करलेॅ छेलै ।

ई आवाज होत्हैं चीता के कान खाड़ोॅ भै गेलै । वैनें मूड़ी घुमाय हिनकोॅ टोपी दिश देखलकै । तखनियो चाचा दम साधले खड़ा रहलै । हुनी अच्छा ढंग सें जानै छेलै कि जों चीता केॅ शक होय गेलै कि कोय छुपलोॅ

बैठलों छै तें, ऊ फौरन नौ, दू, ग्यारह होय जैतै आरू मौका हाथों सें जैतें रहतै ।

एत्तें देर तांय साँस रोकी कें खाड़ों रहवों चाचा लें कठिन भै गेलै। रायफल पकड़लें रहला के कारणें हुनकों हाथो दरद करें लागलों छेलै ।

चीता फेनू बेफिक्र होय गेलै आरो आपनों शिकार के नगीच टहलें लागलै । चाचां आहिस्ता सें आपनों रायफल ठीक करलकै आरो मौका के ताकों में खड़े रहलै ।

चीतां टहलतें-टहलतें भैंस के नगीच रुकी कें हवा में कुछ सूंघै के कोशिश करलकै । फेनू आपनों बड़ों रं मूँ खोली कें जम्हाई लेलकै । यही मौका छेलै जबें चाचां गोली चलाय देलकै । गोली लगथैं चीता कोय आवाजो नै करें पारलै आरो वहीं, नगीच के एक खद्दा में लुढ़की गेलै । आगू बढ़ै सें पहिलें चाचां एकटा आरो गोली चलाय लें चाहलकै मतरकि चीता बिजली के गति नाँखी उछली कें भागलै आरो घास में गायब होय गेलै ।

रातो काफी होय चुकलों छेलै । ऊ जख्मी चीता रों पीछा करवों जान खतरा में डालवों छेलै । यही लें ई काम भोरकों वास्तें छोड़ी कें चचा कैम्प लौटी ऐलै । मतरकि भोर होत्हैं हुनी कुछ आदमी साथ लेलें घायल चीता के तलाशी में निकली गेलै । मरलों भैंस अभी तांय वही जग्घों पर पड़लों होलों छेलै ।

दोपहर तांय चाचा जंगल में भटकतें रहलै । आखिर एक झाड़ी के पत्ता सिनी पर खून के छींटा नजर ऐलै, साथ साथ हुनी चीता के बहुत हल्का गुर्राहटो सुनलकै । सब्भे सचेत होय गेलै । चाचां रायफल नौकर के हाथों में दै कें ओकरा आगू भेजी देलें छेलै आरो आपनें बन्दूक पकड़लें होलों छेलै। हुनी चीता के गुर्राहट सुनत्हैं बन्दूक के लबली पर अंगुली टिकाय लेलकै । सब्भे डरी रहलों छेलै कि कहीं चीता कोय झाड़ी सें निकली कें वै सिनी पर हमला नै करी दै ।

आहिस्ता-आहिस्ता चलतें सब्भे वही जग्घा पर पहुँची गेलै, जहाँ सें चीता कें साफ-साफ देखलों जावें सकें छेलै । सामनाहै एकटा छोटों किसिम के झील छेलै, ओकरे किनारी चीता आपनों घाव चाटवो करी रहलों छेलै ।

नौकरौं चीता कें देखी लेलकै । ऊ रायफल लेलें लपकतें होलें लौटी ऐलै । मतरकि चाचां बन्दूके से निशाना लगैतें गोली चलाय देलकै ।

लेकिन दुर्भाग्य हेने छेलै कि चीता एक दहाड़ लगैतें नजर सें फेनू ओझल होय गेलै । चीतां चाचा के है दोसरों दाफी मांत देलें छेलै ।

हुनी फेनू आगू बढ़लै, आरो वहाँ तक पहुँची गेलै, जहाँ बैठी कें चीता आपनों घाव वहें रं चाटी रहलों छेलै । हुनी वहाँ सें पिछुवाना शुरू करलकै, जहाँ लहू के बूंद टपकतें चल्लों गेलों छेलै । हुनी ओकरे सहारा चीता के पिछुवैतों शुरू करलें छेलै ।

आखिर एक बंसबिट्टी में चाचां लम्बा-लम्बा सांस लेतें चीता कें देखलकै । चीताहौं चाचा कें देखी लेलें छेलै आरो उठे के कोशिश करें लागलों छेलै, मतरकि तब तांय चाचां एक गोली आरो दागी चुकलों छेलै ।

चीता आखरी दहाड़ साथें वही ढेर होय गेलै ।

''चोरबत्ती के रोशनी में निशाना लगाय कें गोली चलैथैं एक दहाड़ सुनैलै। हठाते वृक्ष के डाली चरमराय उठलै आरो रस्सी के बनलों पन्द्रह फिट वाला मचान डाली के टूटथैं जमीनों पर आवी गेलै । किस्मत अच्छा छेलै कि डबल बैरल के बन्दूक हाथों सें छूटी कें पत्थर सें जाय टकरैलै आरो पत्ता कें छेदतें गोली बाहर निकली गेलै । ओत्तें ऊँचाई सें गिरला के बादो जयादा चोट नै लागलों छेलै ।

मचान टुटला के कारण रस्सी ई कदर उलझी गेलों छेलै कि मत पूछों । हम्में बीच में लटकी रहलों रस्सी के सहारा झूलतें होलें जमीन पर आवी गेलौं । जेना झूला के पेंग भरलें रहौं आरो बीचे में रस्सी किनारा करी गेलों रहें'' खालिक चाचां आपनों शिकारी जिनगी के कहानी सुनाय रहलों छेलै आरो हममें बड़ी ध्यान लगाय कें सबटा वृतान्त सुनी रहलों छेलां ।

''हों तें हम्में कही रहलों छेलियौं कि ऊ वक्ती केकरौ चोट-मोट के होशे कहाँ छेलै । बस जान बचावै के फिकिर छेलै । चोटैलों चीता कखनियो हमला करें सकें छेलै । मतरकि अगला पन्द्रह मिनिट तांय कोय हलचल नै होलै । सप्तमी वाला चाँद केरों रात छेलै आरो जंगल एत्तें घन्नों कि चाँदनी

नीचें तांय नै पहुँचै पारै ।

''कुच्छू देर साँस कें रोकलें पड़ले रहलौं । फेनू आपना कें संभाललां। घुटना आरो टखना पर सें चमड़ी छिली गेलों छेलै आरो पतलुन तें एकदम खराब बेढंग किसिम सें फटी गेलों छेलै, मतरकि देह के आरो हिस्सा सलामत छेलै । बन्दूको के पता नै छेलै, नै चोरबत्ती जलाय कें गामें दिश जावें सकै छेलौं । जेना-तेना आपना कें संभालतें एक गाछ पर चढ़ी गेलां । शिकार में हमेशे एक सें दू होवों अच्छा होय छै । मतरकि हौ दिन हममें असकल्लों आवी गेलों छेलियै ।

''असल में पिछुलका कै दिनों सें ई चीता लोगों कें परेशान करी रहलों छेलै । गाँव रों ढोर-ढांगर के तें नुकसान करवे करै, आबें ऊ एत्तें दिलेर होय चल्लों छेलै कि राह चलतें आदमियो कें जख्मी करना शुरू करी देलें छेलै अस्पताल में पड़लों तीन जख्मी आजो ओकरा कोसी रहलों छेलै । गाँव के पंचायत नें कल्कटर के यहाँ शिकायत दर्ज करलें छेलै आरो हमरा ऊ चीता कें खतम करै के आदेश मिली चुकलों छेलै ।

''हम्में आरो हमरों साथी उमेश राय निकली पड़लियै । गर्मी के दिन छेलै । एकाध स्थानीय शिकारियो कें साथ लै के बात छेलै । मतरकि हेनों हुऍ नै सकलै ।

''ई गाँव शहर सें चालीस मील दूर छेलै । हमरा सिनी जीप सें तीन बजें रवाना होलां आरो रास्ता में रुकतें होलें पाँच बजें ऊ पड़ाव पर पहुँचलां, जहाँ सें गाड़ी आगू नै जावें सकें छेलै ।

''जीप ग्राम पंचायत के हाथें सुपुर्द करी आगू बढ़लां । तीन मील तांय पहाड़ी पगडंडी सें उतरतें-चढ़तें काफी वक्त लगी गेलै आरो जबें हमरा सिनी गाँव में दाखिल होलां तें सूरज छुपै के तैयारी करी रहलों छेलै ।

''सफर के थकान भूली कें हम्में शिकार के बारें मे ढेर सिनी जानकारी लेलियै आरो चंचल पहाड़ी नद्दी के किनारी-किनारी फैललों जंगल में ढुकी गेलियै ।

''गाँववाला, हमरा ऊ सब जग्घों दिखलैलकै जहाँ-जहाँ चीतां शिकार करलें छेलै । हम्में नद्दी के ऊ हिस्साओ देखलियै, जेकरों आगू चट्टान सिनी के होला के कारणें पानी जमा होय रहलों छेलै । आरो शेर, चीता, सूअर आरनी दोसरों, दोसरों जंगली जानवर पानी पीयै लें जरूरे ऐतें होतै ।

''हमरा सिनी बड्डी कोशिश करलियै कि चीता रों पंजा सिनी के निशान मिली जाय आकि फेनू कोय टटका मारलों, आधों खैलों शिकारे । मतरकि हौ दिन हमरा सिनी कें आरो कुछ ज्यादा मालूम नै हुऍ सकलै आरो हमरा सिनी आपनों तलाश के काम दोसरों दिन लें छोड़ी कें गाँव लौटी ऐलां।

''दोसरों दिन भुरकवा उगै के पहिलै हमरा दोनों बन्दूक लेलें जंगल दिश निकली पड़लां । ऊ दिन हम्में एक्को क्षण बर्बाद नै करै लें चाहै छेलियै, कैन्हें कि शिकारी आरो जवारी के एक्के बार दांव बैठै छै । या तें बाजी मांत या फेनू हार । एक दाफी शिकार हाथ सें निकली गेलौं तें फेनू ओकरों कोय भरोसों नै ।

''सूरज के दू बांस चढ़ै तांय हमरा सिनी जंगल में भटकथैं रहलां । जे हुऍ, एकरों अन्दाजा तें लगिये गेलों छेलै कि आइन्दा हमरा सिनी कें भी करना चाही । चीता कें घेरै लें हम्में चार स्थान निश्चित करलियै, जे एक दूसरा सें मील, डेढ़ मील सें ज्यादा दूरी पर नै छेलै । गाँववाला कें राजी करी आरो कीमतो दै हम्में चार बकरा मंगवैलां आरो तीन्हें बजें ऊ बकरा सिनी कें निश्चित स्थानों पर बंधवाय देलियै ।

''हमरों योजना ई छेलै कि दू जग्घा पर बकरा बांधी कें दू आदमी कें गाछी पर बैठाय देलों जाय ताकि बकरा पर नजर रखें सकें । जेन्हैं चीता बकरा पर हमला करै, ऊ शोर शराबा करी कें ओकरा भगाय दौ । फेनू मौका पावी हम्में आकि उमेश राय वहाँ पहुँची जाय आरो चीता के लौटला पर ओकरों शिकार होय जाय ।

''चीता के लौटवों निश्चित छेलै । ऊ आपनों शिकार बनैलों जानवर कें बादे में खाय छै । बाकी दू जग्घा लें हम्में ई योजना रखलें छेलियै कि रस्सी के मचान बनाय कें वै पर बैठौं, आरो जों चीता बकरा के नगीच आवै छै तें ओकरा शिकार करी लौं । शाम होत्हैं ई किंछा हठाते दिल में उभरी ऐलै कि कैन्हें नी हम्में असकल्ले ऊ चीता के शिकार करौं । मतरकि लाचारी ई छेलै कि उमेश राय हमरों साथ छेलै । ऊ हालतों में हम्में हुनका हेनों जग्धा में बैठैलियै जहाँ चीता रों आवै के उम्मीद एकदम कम सें कम छेलै । यही नै, हम्में तीनो स्थानों पर दू-तीन चक्करो लगाय लेलियै कि चीता बकरा लुग पहुँचलै कि नै । मतरकि सूरज डूबै तांय ऊ नै ऐलै ।

''आखिर में हमरा सिनी ऊ रात जंगलै में गुजारै के योजना बनैलियै। रात भरी जागवोॅ जरूरी छेलै, यही लेॅ हम्में कुछ बिस्कुट खाय केॅ आरो गरम-गरम चाय पीवी केॅ संतोख करी लेलां ।

''धीरें-धीरें सन्नाटा फैली गेलै । रात के काफिलो आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ें लागलै । आरो हमरा हेनोॅ लागेॅ लागलै कि जेना रातो चौकन्ना होय गेलोॅ रहें ।

''हम्में इन्तजार करतें रहलियै मतरकि चीता आधो रात तांय हमरोॅ बकरा के नगीच नै ऐलै । जहाँ दू हिस्सा में दोसरोॅ लोग बैठलोॅ छेलै, वहाँ चीता चक्कर काटी चुकलोॅ छेलै, आरो एकरोॅ पहिलें कि ऊ बकरा नगीच पहुँचतियै, हो-हल्ला करी केॅ चीता भगाय देलेॅ गेलोॅ छेलै ।

''ठीक आधोॅ रात के वक्ती चीता हमरोॅ दिश बढ़लै आरो बकरा पर हमला करी देलकै आरो रस्सी तोड़ी ओकरा मुँह में दबाय केॅ भागै के कोशिश करेॅ लागलै । ठीक हेने वक्ती पर हम्में चोरबत्ती के रोशनी फेंकी निशाना लगैलियै । कि तभिये हमरा दहाड़ सुनाय पड़लै । हमरा दोसरोॅ फायर करै के मौको नै मिललोॅ छेलै आरो हम्में नीचें गिरी गेलोॅ छेलियै ।

''एकदम भोरे-भोर सब घटनास्थल पर पहुँची गेलै । गाँव में नै जानौं ई खबर केना फैली गेलोॅ छेलै कि हम्में चीता रोॅ लपेटोॅ में आवी गेलोॅ छियै आरो बड्डी गंभीर रूपोॅ सें घायल होय गेलोॅ छी । पचासो लोग हमरा देखै लेॅ दौड़ी पड़लोॅ छेलै । उमेश राय नें प्रारम्भिक उपचार के रूपोॅ में हमरोॅ घावोॅ पर मरहम पट्टी करी देलेॅ छेलै आरो हम्में अगला योजना लेली तैयार होय गेलियै । गाँव वाला सिनी केॅ वहीं ठहराय लेलेॅ छेलियै ।

''सबसें पहिलें हम्में आपनोॅ बन्दूक संभाललां । चोरबत्ती के शीशा टूटी केॅ बिखरी गेलोॅ छेलै, मतरकि बन्दूक सही सलामत छेलै, भले ही बकरा वहाँ मरलोॅ होलोॅ छेलै, जैठां चीता गिरलोॅ छेलै, वैठां लहू केरोॅ धब्बा साफ दिखावै छेलै ।

''एकरोॅ मतलब साफ छेलै कि हमरोॅ कोय गोली जरूरे चीता केॅ लागलोॅ छेलै । मतरकि है नै कहलोॅ जावेॅ सकेॅ छेलै कि ऊ कत्तेॅ चोटैलोॅ छेलै। जे भी हुएॅ, आबेॅ ओकरा खोजी निकालना बहुत जरूरी छेलै, कैन्हें कि चोटैलोॅ जानवर दोसरोॅ जानवरोॅ सें ज्यादा खतरनाक होय छै । फेनू ई तेॅ जंगली चीता छेले, जे आय नै तेॅ कल गाँव वाला सें आपनोॅ बदला जरूरे

लेतियै ।

''पहिलें हम्में ई पता लगैवों जरूरी बुझलियै कि चीता आखिर गेलों छै कोंन दिश आरो कहाँ तक गेलों छै ? एकरों लेली हम्में खून आरो पंजा के निशान कें पहचान करलियै । बकरा सें लगभग दू तीन फर्लांग के दूरी तांय हमरा खून के बूंद दिखैतें रहलै, ओकरों बाद सब निशान गायब छेलै । एकरों मतलब साफ छेलै कि ऊ चीता एकरों बाद सामना वाला नदी में उतरी गेलों छेलै आरो एकरों बाद पहाड़ी के कोय हिस्सा में छुपी कें बैठी गेलों होतै ।

''दू तीन मील के घेरा के पहाड़ी के चक्कर काटी हम्में ई अन्दाज करलियै कि चीता पहाड़ी के भीतरे कहीं छै, कैन्हेंकि चीता के पंजा रों निशान आकि खून रों धब्बा आगू कहूँ नजर नै ऐलै । यही लें ई तै छेलै कि चीता यहें पहाड़ी के कोय झाड़ी में छुपी कें बैठलों छै । आरो ओकरा बाहर निकालै लेली हाँक लगवैवों जरूरी छेलै । घायल शेर आकि चीता कें ढूंढै लेली हाथी सें हाँक लगवैवों अच्छा होय छै । मतरकि हमरा वास्तें ई संभव नै छेलै । से पैदले हांक के खतरा मोल लै लें लागलै ।

''पहाड़ी के गाछ सिनी पर नगीच-नगीच आदमी कें बिठाय देलियै आरो ऊ सब कें बताय देलियै कि जेन्हें कें चीता हांका तोड़ी कें आगू बढ़ै, ऊ सिनी हो-हल्ला करें लागै आरो ओकरा हमरों ओर लौटाय दै ।

''उमेश राय पहाड़ी रों ऊपरी पगडंडी पर पहुँची गेलै, जहाँ सें हुनी डेढ़ सौ गज के दूरी तक अच्छा नाँखी चारो दिश देखें सकें छेलै ।

''तखनी हम्में गाछी पर नै चढ़ें सकै छेलां, यहें लें हमरा हांका वाला सिनी के साथें रहै लें पड़लै । आधों चाँद के शकल के घेरा बनाय कें हमरा सिनी पहाड़ी कें घेरी लेलियै आरो पोटाश के गोली छोड़तें झाड़ी सिनी कें पीटें लागलियै ।

''हमरा सिनी पहाड़ी के पीछू सें हाँका शुरू करलें छेलियै आरो आधों सें अधिक ऊपर पहाड़ी पार करी चुकलों छेलियै । हाँका में कुछ जंगली मुर्गा, खरगोश आरनी निकली कें भागलै, मजकि नुकलों चीता कहूँ नजर नै ऐलै । एक ठो लकड़बग्घो दिखैलै, जेकरा उमेश राय नें गोली चलाय कें ढेर करी देलकै ।

''पहाड़ी रों सिरा पर पहुँची कें हमरौ सिनी थोड़ों देर सुस्तावै लें

बैठी गेलियै । वहाँ सें देखला पर अन्दाजा लागलै कि पहाड़ी के दायां दिश ढालान छै आरो ई ढालान नदी के पार करी दोसरों दिश घन्नों जंगल सें जाय मिललों छै ।

''हम्में सोचलियै, जों चीता एक दाफी नदी पार करी ऊ घन्नों जंगल में घुसी जाय छै, तबें हमरों सब करलों-करैलों चौपटे होय जैतै ।

''हम्में जानी लेलें छेलियै कि चीता हाँका तोड़ी कें यहाँ सें निकलै के चेष्टा करतै, आरो हमरों कोशिश ई छेलै कि ओकरा केन्हौं कें घेरी-घारी खुल्ला मैदान में उमेश राय दिश बढ़ावौं ताकि आसानी सें ओकरा निशाना पर लेलों जावें सकें ।

''नै जानौं की सोची कें हम्में आपनों पोजीशन बदली लेलियै आरो पहाड़ी के दायां दिश वाला टोली साथें होय लेलियै, जन्नें ऊ जंगल पड़ै छेलै।

''हम्में फेनू तेजी से हांका शुरू करलियै । पहाड़ी हो, हो, हो के आवाज सें गूंजी रहलों छेलै ।

''कि हठाते पहाड़ी के बायां दिश सें गाछी पर चढ़लों लोगें कपड़ा हिलाय कें संकेत देलकै कि चीता आवी गेलों छै । आरो अपनों जग्घा सें उठी कें रवाना होय चुकलों छै ।

''सुनत्हैं, हम्में सावधान होय गेलियै । बायां दिश सें, हिन्नें-हुन्नें सें चीता के भागै के आवाज आवें लागलै ।

''रुकतें, थमतें आरो टोह लेतें चीता हौले-हौले बढ़ी रहलों छेलै । ऊ जहैं रुकै के कोशिश करै, गाछी पर चढ़लों लोगें ओकरा भगाय दै । आखिर ऊ पहाड़ी रों नीचू दिश उमेश राय के ओर बढ़ें लागलै ।

आरो जबें उमेश राय के गाछी सें दू सौ गज के दूरी तांय पहुँचले तें, वहाँ एकटा खड़ा चट्टान के ओटों में खड़ा होय कें अन्दाजा लगावें लागलै कि आखिर ऊ कन्नें जाय ।

''फेरू वैनें बिजली गति सें छलांग लगैलकै आरो दौड़ें लागलै । ओकरों रुख वहें घन्नों जंगल दिश छेलै । ई सब एत्तें तेजी सें होलै कि उमेश राय कें गोली चलावै के कोय मौके ने मिललै । हांका के वजह सें पहिले तें ऊ विपरीत दिशा में जाय रहलों छेलै, मतरकि आबें ऊ जंगल में घुसै लें दौड़लों जाय रहलों छेलै । यानी कि बिजली के तेजी सें हमरों दिश चल्लों आवी रहलों छेलै ।

''खुशकिस्मती सें ई तरफ चढ़ाव छेलै यै लेली हमरा संभलै रों मौका मिली गेलै । मुश्किल सें डेढ़ मिनिट गुजरलों होते कि हम्में आरो चीता आमना-सामना छेलियै । दोनों के बीच के दूरी लगभग दस गज के दूरी के होतै । चीता ठहरलै, आबें ओकरों चमकतें, आगिन बरसैतें आँख हमरै पर टिकी गेलै ।

''चीता चाहै छेलै कि हम्में रस्ता सें हटी जावं आरो हम्में ई कोशिश में छेलियै कि चीता जों कन्नी कटाय कें निकलै तें हम्में गोली चलावौं । मतरकि हमरा दोनों के ई किंछा पूरा होय सें रहिये गेलै । चीता एक दाफी गुर्रैलै आरो हमरों ऊपर छलांग लगाय देलकै । हम्में तें पहिलैं से तैयार छेवे करलियै । चीता के छलांग लगैथैं हम्में लबली दबाय देलियै । गोली ओकरों पेट में लगलै । गोली लगै भर के देर देलै कि चीता गिरी पड़लै । तभियो ओकरों छलांग एत्तें लम्बा आरो तेज छेलै कि हमरे लुग आवी कें ऊ गिरलै। हम्में बड़ा फुर्त्ती सें पाँच, छों गज पीछू हटी गेलियै । बन्दूक सीधो करवों नै भुललों छेलियै । मतरकि हमरों दुर्योग लें उतना समय काफी छेलै । चीता एक दाफी फेनू उछललै आरो ओकरों दोनों अगलका पंजा हमरा बदन पर ठीक ठाक जमी गेलै । ऊ समय बदन में आगिन रों एक लहर गोड़ सें मूड़ी तांय दौड़ी गेलै । हमरा बेहोशी आवें लागलै । मतरकि सच्चाई तें यहें छेकै कि जिन्दगी सबकें प्यारों होय छै । जान बचावै के फिक्र नें हमरों होश ठिकानों पर लानी देलें छेलै, आरो हम्में हौ खुल्ला जबड़ा में, जे हमरों गर्दन दिश बढ़ी रहलों छेलै, बन्दूक रों कुन्दा ठूंसवों शुरू करी देलियै । आरो चीता छेलै कि पीछू हटै या पंजा हटाय के बदला बन्दूक कुन्दे मुँह सें दबाय कें चवावें लागलै ।

''बन्दूक के कुन्दा चबावै वक्ती हमरों बदन पर ओकरों पंजा के पकड़ ढीला पड़ी गेलै । हम्में एकरा अच्छा मौका समझतें ओकरा आपनों पूरा ताकत लगाय कें धकेली दलियै । बन्दूक उठैलियै । मजकि है बीचों में चीता फेनू सें छलांग वास्तें देह समेटें लागलों छेलै । कि ठीक तखनिये हम्में बिना निशाना लगैलै लबली दबाय देलियै ।

''एकरा हमरों सौभाग्ये कहों कि गोली ओकरों खोपड़ी तोड़तें होलें निकली गेलै । चीता दू तीन फीट हवा में उछललै, आरो जमीन पर ढेर होय गेलै । गोली के आवाज पर उमेश राय आरो दोसरो लोग गाछी सें

उतरी-उतरी दौड़ी पड़लै ।

हमरा पर एक दाफी फेनू बेहाशी छावें लागलों छेलै ।

ऊ दिन खालिक चाचा बैठलों-बैठलों हुक्का गुड़गुड़ाय रहलों छेलै । उर्दू अखबार पढ़ी रहलों छेलै कि तखनिये हम्में पूछी लेलियै, ''तोहें कभियो शेर के शिकार करलें छौ ?''

तें हुनी जोरदार कश लेतें बोललै, ''शेर सें संबंधित ढेरे याद हमरों दिमागों में छै । ऊ सिनी कें जों समैटै लें बैठै छियै तें बदन में जवानी जेहनों गरमी दौड़ें लागै छै ।'' एतना बोलत्हैं हुनी जोर-जोर सें हुक्का गुड़गुड़ावें लागलों छेलै ।

''कैन्हें नी आय तोहें शेर सें संबंधित ऊ यादों कें समेटों आरो शेर संबंधी कुछ अनुभव हमरौ बतावों ।'' हम्में उत्सुकता में आपनों इच्छा प्रकट करलियै ।

कुछ देर ध्यानस्थ रहला आरो हुक्का गुड़गुड़ैला के बाद हुनी बोललै, ''अच्छा तें सुनों, शेर के क्रिया-कलाप पता लगावै वास्तें भोरकों समय बढ़िया होय छै । ऊ समय के मौसमो अच्छा रहै छै । फेनू रातकों सब्भे टा पदचिन्हो सुरक्षित रहै छै । फेनू ऊ वक्ती दोसरों जंगली जानवर चलें फिरें लागै छै, जेकरों मदद सें शेर के क्रियाकलाप रों पता लागै छै । एतन्है नै, भोरे आठ-नौ बजें तांय तें बन्दर, मोर, सांभर, चीतल आरनी के किसिम-किसिम के आवाजो सें शेर के क्रिया-कलाप के बारे में पता लगैलों जावें सकै छै ।''

''हौ केना कें ?'' हम्में उत्सुकता जाहिर करलियै ।

''उदाहरण के तौर पर बन्दरे कें लें । बन्दरो शिकारी वास्तें मददगार सिद्ध होय छै । कहलों जाय छै कि शेरनी आपनों बच्चा कें मोर आरो बन्दरे के जरिया सें शिकार करै लें सिखाय छै । आरो यहू दोनों शेर सें बहुत होशियार, खबरदार रहलों ।''

''अच्छाऽऽऽ ! मजकि तोहें आपनों अनुभव बतावों ।''

''एक दाफी के बात छेकै, हम्में धन्वा-मन्वा के जंगल में शेर के पंजा के निशान के मदद सें ओकरा पिछुवाय रहलों छैलियै कि एकाएक ढलान शुरू भै गेलै । जों हम्में आरो कुछ कदम बढ़लों होतियै तें सीधे नीचें खाई में होतियै । ठीक वहें वक्ती बन्दर सिनी के चीख सुनाय पड़ें लागलै। हम्में नजर दौड़ैलियै तें कुछुवे दूरी पर एकटा भोकसों शेर के मूड़ी आरो पुट्ठों दिखाय पड़लै । ठीक यहें बीचों में एक दोसरा शेरें भयानक दहाड़ लगैलकै ।

हम्में गाँव रों मुखिया के हाथी साथें लानलें छेलियै । आबें वै पर सवार होय कें शेर के तलाश में निकली पड़लियै । कुछवे दूरी तै करलें होवै कि एक शेर दिखाय पड़लै । हम्में हौदै सें निशाना लगैलियै आरो तीन औंस के गोली ओकरों माथा पर दागी देलियै । एत्तें आसान शिकार हमरा आपनों जिन्दगी में कभियो नै मिललों छेलै । वै दिशों सें जबें कोय आवाज नै ऐलै तें, हम्में नगीच जाय कें देखलियै, शेर सचमुचे में ढेर होय चुकलों छेलै ।

फेनू हम्में दोसरों शेर के तलाश में आगू बढ़लियै, जे बेशक फल्गू नदी के दिश जामुन के जंगल में गुम होय गेलों छेलै । काफी भाग-दौड़ के बाद ओकरौ खोजी निकालियै, जे तखनी आपनों अगला पंजा पर सिर टिकैलें शैतान नांखी बैठलों छेलै । मौका चूकै लें की देतियै । हम्में निशाना साधलियै । गोली खैत्हैं शेर बड़ी जोर सें दहाड़लै ।

हम्में महसूस करलियै कि हमरों हाथी शिकार के मामला में नया छै, तभियो वैनें बड्डी बहादुरी आरो धैर्य के परिचय देलकै । जख्मी शेर लगभग ओकरों अगला पैर के बीचों में पड़लों छेलै, तहियो हाथी घबरैलै नै । ऊ जरा हटकी जरूरे गेलै ।

वास्तव में, शिकार में टुटलों कमर टुट्टा घायल शेर केरों दिल दहलाय दै वाला दहाड़ सें ज्यादा भयावह दोसरो नजारा होवो नै करै छै । वैं आपनों आस-पास रों पत्थर, झाड़ी आरो खुद आपनों देहो के कचूमर निकाली दै छै । आबें आरो एक गोली चलाय कें ओकरा ओकरों दुख आरो तकलीफ सें मुक्ति दै देना हमरों लेली जरूरी फर्ज बनी गेलों छेलै ।

ऊ शेर के शिकार लेली हौ राती हम्में भैंस के एक बच्चो बंधवैलियै, मतरकि हौ राती हम्में ओकरा ढूढै में नाकामे रहलियै, कैन्हेंकि हमरों हाथीं

बीच्है में चिग्घाड़ी कें सबटा काम बिगाड़ी देलें छेलै ।

मतरकि दोसरों रात हम्में ओकरा ढूंढिये निकालियै । एक सांभर हमरों नगीचे चिल्लैलों छेलै । हम्में मुड़ी कें देखलियै तें देखलियै कि ओकरों चीखै के कारण सामनाहै में मौजूद छेलै । फेनू की छेलै, हम्में शेर पर गोली चलैलियै । घायल होत्हैं वैं छलांग लगैलकै आरो आगू दिश भागी गेलै । हम्में हाथी कें तेज-तेज हाँकलियै आरो पिछुवैतें ओकरों नगीच पहुँची गेलियै । एक ठियां रुकी कें घायल शेंरे घुरी कें हमरा देखलें छेलै कि हम्में तखनिये गोली चलाय देलियै । मतरकि है बात सच्चे छेकै कि बड़ी मुश्किल सें हम्में ऊ शेर कें मारें सकलें छेलियै ।

यैठां हम्में एकटा आरो मददगार शिकारी के जिकिर करवौं, जेकरा लोगें मुंशी जी कहै छेलै । ऊ एत्तै मोटों बेडौल आरो बदसूरत छेलै कि आपन्हैं कहतें रहै कि हमरा तें कोय शेरो खाय के बारे में नै सोचें पारें । बच्चा-बुतरू ओकरा देखत्हैं ई गीत गावी उठै,

एत्तें केना मोटावै छै
थुलथुल धुम्माँ आवै छै
माथों दूधों के चुक्का रँ
केकरो-केकरो हुक्का रँ
पेट भोजों के हड़िया रँ
माथों लगै छै कुढ़िया रँ
मिनिर-मिनिर की गावै छै
थुलथुल धुम्माँ आवै छै
गोड़ उठै छै थुबुक-थुबुक
चिड़ियैं नाँखी फुदुक-फुदुक
पिन्हलें छेलै नया खड़ाम
धुम्माँ गिरलै चित्त धड़ाम
कुरल्हों जाय नेंगचावै छै
थुलथुल धुम्माँ आवै छै ।

मुंशी जी आपनों पहिलकों जिनगी उत्तरी हिन्दुस्तान में राजा-रजवाड़ा वास्तें बाज इकट्ठा करै आरो हुनका सिनी कें शिकार के तरीका सिखावै में बीतलों छेलै ।

रेत पर जंगली जानवर के गोड़ॉ के जे निशान बनी जाय, ओकरा वैं आसानी सें पहचानी जाय । हेना कें तें ऊ एकदम मुर्ख जट्ठर छेलै, मजकि ओकरॉ नजर बड़ी तेज छेलै । शेर के क्रियाकलाप के खबर दै में तें ऊ बड्डी चालाक आरो माहिर छेलै । जब तक खुद आँखी सें नै देखी लेलकै, कभियो वैंने हमरा शेर के उपस्थिति के खबर ने देलकै । ऊ खुद निश्चिन्त नै होय गेलै, ओकरा भरोसा नै होय गेलै । शेर के पास निहत्था चल्लॉ जाय के अद्भुत साहसो ओकरॉ पास छेलै । हेना कें ओकरा मौका कभियो नै ऐलै।

खालिक चाचां आगू बतैलें छेलै कि मुंशी एक दाफी आपनॉ एक रिश्तेदार के शादी में गेलै । शहर ऐलॉ छेलै आरो तभिये सें यहाँकरे बनी कें रही गेलै । कोय्यों शिकारी के हैसियत सें ओकरॉ परिचय हमरा देलें छेलै आरो तभिये सें हम्में अक्सर ओकरा शिकार पर लै लियै ।

''एक दाफी के बात छेकै । कैम्प में हमरा तेज बुखार आबी गेलै।'' खालिक चाचां बड़ी रौबदार अन्दाज में कही रहलॉ छेलै, ''मुंशी हमरॉ साथ छेलै, हम्में ओकरा कुछ चिड़ियां मारी कें लै आनै लें कहलियै । ऊ जंगल दिश निकललै तें संयोगे सें ओकरा एक ठो शेरनी दिखाय पड़ी गेलै । ऊ तें उल्टे पाँव हमरॉ लुग लौटी ऐलै आरो सब हाल सुनैलकै ।

''मतरकि हम्में तें बीमार छेलियै, से नै जावें सकलियै, मतरकि मुंशी कें शौक के सनक सवार होय गेलै । वैं शेर कें मारै लें चाहै छेलै तें, हम्मू रोकलियै नै, इजाजत दै देलियै । हमरॉ कहले मुताबिक वैनें एक बछड़ा नगीच में बांधी ऐलै आरो एक ठो गाछी पर चढ़ी शेरनी के इन्तजार में बैठी रहलै । शेरनी ऐलै आरो आपनॉ जांघ में मुंशी के गोली खाय कें घन्नॉ जंगल में घुसी गेलै । बहादुर मतर मुर्ख मुंशी भोर होत्हैं घायल शेरनी के खून के बूंद के सहारा ओकरॉ पीछा करवॉ शुरू करलकै, मजकि जल्दिये ओकरॉ समझ में ई बात आवी गेलै कि बिना शिकार रॉ किंछा के शेर कें पिछुवैवॉ आरो बन्दूक लैकें शिकार के किंछा सें शेर केरॉ पीछा करवॉ में भारी फरक छै ।

''ऊ मुश्किल सें कुछुवे कदम आगू बढ़लॉ होतै कि शेरनी आवी दबोचलकै । बन्दूक ओकरॉ हाथॉ सें छूटी कें दूर जाय गिरलै । चोटैलॉ शेरनी ओकरा पछाड़ी देलकै । है तें मुंशी के भाग्ये छेलै कि जबें शेरनी

आपनों गुस्सा उतारी चुकलै तें, ओकरा छोड़ी कें चली देलकै ।

बाद में अरमरैतें मुंशी कें मीलो दूर जहानाबाद के एक अस्पताल में आनलों गेलै, जहाँ ओकरों ढेरे दिन तांय इलाज चलतैं रहलै । मतरकि ओकरों बहादुरी में कोय फरक नै पड़लै । ओकरों आँखी सें बदला लैके आगिन निकलतें रहै । वैं एक दिन कहलकै कि जों हमरा जिन्दा देख लें चाहै छौ तें हौ शेरनी कें मारी हमरों सम्मुख लानी दें ।

ऊ आपन्हैं तें साथ जावें नै सकै छेलै, कैन्हेंकि तभियो तांय ओकरों घाव भरलों नै छेलै । हम्में मुंशी के कदर करै छेलियै आरो स्थानीय लोगों सें अपनत्वो राखै छेलियै। फेनू ऊ सब के डर कें समझै छेलियै जे सिनी घायल शेरनी कें मारी दै पर दवाब दै रहलों छेलै ।

आखिर एक दिन मुंशी कें बिना बतैले हम्में वहें रं के तेज बुखार में शेरनी के शिकार के टोह में निकली पड़लियै ।

एकरा संयोगे कहों कि शेरनी के तलाश में हम्में निकललों छेलियै, मजकि हमरा सें पहिलें शेरनिये हमरा पावी लेलकै । अभी हमरो साथी गाछी पर चढ़ो नै पारलें छेलै आरो हम्में संभलो नै पारलों छेलां कि शेरनी हमरों ऊपर झपटी पड़लै ।

हम्में देखलियै—ऊ दुबली-पतली शेरनी एक हेनों बिल्ली नाँखी नजर आवी रहलों छेलै, जेकरा कुत्तां घेरी राखलें रहें ।

पहलों दू गोली ठीक निशाना पर लागलै, मजकि गोली ओकरा छलांग लगावै सें नै रोकें सकलकै । तेज बिजलिये नांखी ऊ झपटतें होलों हमरों हाथी के सूँड़ के एकदम नगीच आवी गेलै ।

हम्में तें हक्का-बक्का छेलियै । मतरकि हौ समय एकरों कहाँ छेलै कि गोली खैयो कें दमखम साथें छलांग लगैतें शेरनी के तारीफ करलों जाय आकि कोय अभिभूत हुऍ । हम्में एक गोली आरो चलाय देलियै, जे शेरनी के गल्ला सें होतें ओकरी छाती में धसी गेलै । आबें तें ऊ एकदम मजबूर छेलै, मतरकि आचरज, ओकरों गोस्सा में तहियो कोय कमी नै ऐलों छेलै । ऊ जोर-जोर सें दहाड़ें लागलै आरो पंजा पटकें लागलै । ओकरों ऊ हालत तखनी तांय रहलै, जब तांय ओकरों दम नै टूटी गेलै ।

हम्मे मुंशी के ओरी सें बदला लै लेलें छेलियै । मतरिक मुंशी ओत्तें भयानक आरो गंभीर रूपों सें घायल होला के कारणें बचें नै पारलै ।

अस्पताले में चली बसलै । बस आपनों यादे छोड़ी गेलै ।

गर्मी छुट्टी में हमरा सिनी खालिक चचां कन गेलों होलों छेलियै । सोचै छेलियै कि चाचा कें फुर्सत मिलें आरो हमरा सिनी शिकार के किस्सा सुनियै। आखिर एक शाम हुनका फुर्सत में देखी कें हमरा सिनी हुनका घेरी लेलियै आरो याद कें ठीक करतें शिकार के कोय घटना सुनाय लेली जिद करलियै ।

बहुत आग्रह के बाद हुनी कहना शुरू करलकै ''एक दाफी करीब-करीब एक हफ्ता तांय हम्में एक आदमखोर शेर के शिकार के फेरा में परेशान रहलियै । लगभग दस आदमी कें वैं अब तांय मारी चुकलों छेलै । ओकरों डरों सें सड़को तक बन्द आरो सुनसान होय चुकलों छेलै । हौ सड़क सिनी में एक तें एकदम खास छेलै, जे मखदमपुर के सागोन वाला जंगल में फल्गू घाटी तक जाय छेलै । तखनी हौ समय रेल के पटरी बिछैलों जाय रहलों छेलै। कामो जोरों से चली रहलों छेलै । मतरकि हौ आदमखोर के कारणें स्लिपर के ठेकेदार सिनी के काम लगभग बन्द होय गेलों छेलै । शेरें तीस चालीस मील वर्ग के इलाका में दहशत फैलाय राखलें छेलै ।

हम्में सर्वेक्षण के बाद ई अन्दाजा लगैलियै कि ई काम खाली एक शेर के नै हुऍ पारें आरो जल्दिये ई सच्चाई जाहिरो होय गेलै ।

एक शेर मारलों गेलै, मतरकि आदमी अभियो गायब होय रहलों छेलै । मुंशी हौ दिनों में हमरों साथें छेलै, जे ऊ शहर सें जुड़लों किसिम-किसिम के खबर हमरा सुनैतें रहै कि लोगें शेर कें मोटों-ताजा बनावै छै आरो यहू कहै कि हौ शेर के कप्पाड़ों पर पूर्णिमाशी के चांद रं निशान छै । लोगों के यहू कहना छेलै कि वैं राह चलतें मुसाफिर के टोली कें रोकी दै आरो आपनें जमीन पर लोटें लागै । फेनू डरलों मुसाफिर कें जानै के कोशिश करै, फेनू वैमें सें सबसें मोटों आदमी चुनी कें लै जाय । ई सब बातों के साथ यहू बात मशहूर छेलै कि वैं जबें चाहें, कोय्यो शकल में अपना कें बदली लै के ताकत

रखै छेलै । अक्सर ओकरा शुद्धों-साद्धों लकड़हारा रूपें में देखलों गेलों छेलै। यहू कहलों जाय छेलै कि वैं जत्तें लोगों कें मारनें छेलै, ओकरों आत्मा ओकरा पर सवार रहै छेलै ।

हेने सब अजीब आरो अविश्वसनीय बात ऊ शेर के बारे में प्रचलित छेलै, जे जरूरे मनगढ़न्त और भयभीत दिमाग केरों उपज छेलै ।

तहियो हम्में ऊ शेर कें मारै के ठानी लेलियै । हम्में हाथी पर सवार होय के चरखेरा गांव दिश खाना होय गेलियै । हमरों साथें बारह, पन्द्रह आदमियो छेलै, जे सिनी कें हांका वास्तें लेलों गेलों छेलै । जाय वक्ती रास्ता में कत्तें नी वीरानों गाँव कें देखलियै, जहाँकरों लोग ऊ आदमखोर शेर के डरों सें घोंरे छोड़ी कें भागी गेलों छेलै ।

चलतें-चलतें हम्में एक नाला लुग पहुँचलियै, जेकरों चारो दिश घन्नों जंगले सें घिरलों छेलै । वही ठियां बसलों गाँव सें हमरा कुछ मुसाफिर कें शेर द्वारा पकड़ै जाय के खबर मिललों छेलै । घटनास्थ्ल पर खून रों ध ाब्बा, फटलों-चिटलों कपड़ा आरो हड्डियो गवाह के रूपों में मिललै ।

तखनी शाम होय रहलों छेलै आरो हम्में थकियो गेलों छेलां । एतनै में हमरों हाथी के बगल में चली रहलों एक आदमीं रुकै के इशारा करलकै। असल में वैं शेर के पंजा के निशान देखी लेलें छेलै । तखनी शाम हुएँ लागलों छेलै । सूरज गाछी रों ओट में जाय चुकलों छेलै ।

रात में शेर के तलाश करवों बेकार आरो खतरनाक बुझी कें हमरा सिनी वही ठां खेमा डाली देलिये आरो सुस्तावें लागलियै ।

भोरे उठी हम्में नाला दिश गेलियै, मतरकि कोय निशान नै मिललै। लौटी कें नाश्ता करै लें बेठले छेलियै कि बनजारां सिनी आवी कें बतैलकै कि ऊ सब के एक आदमी कें शेर उठाय लै गेलों छै ।

हम्में बिना नाश्ता करलै घटनास्थल पर पहुँची गेलियै । देखलियै शेरें ऊ वनजारा कें घसीटी नाला तांय लै गेलों छेलै । वैठां तक तें निशान साफ छेलै, मतरकि ओकरों बाद ऊच्चों-उच्चों घास शुरू होय गेलों छेलै, जे हौदा तांय पहुँची रहलों छेलै ।

यैठां हमरों हाथीं एक दाफी जोर सें जमीन पर लात मारलकै आरो सूंढ़ ऊपर करी चिग्घाड़ी उठलै । ओकरों बादे लम्बा-लम्बा घास हिलतें नजर आवें लागलै । हमरा सिनी तेजी सें आगू बढ़लियै आरो जल्दिये ऊ अभागा

बनजारा लुग पहुँची गेलियै, जेकरों आधों शरीर शेर के भोजन बनी चुकलों छेलै ।

हालांकि हमरा एक पीरों रं चीज जरूरे नजर ऐलै, मतरकि घास के लम्बा होला के कारणें निशाना साधवों एकदम कठिन छेलै आरो फेनू हम्में फायर करै के हालतो आकि स्थिति में नै छेलियै । आगू चली कें रास्ता पथरीला होय गेलों छेलै आरो कोय निशानो नजर नै ऐलै । हम्में सौंसे दिन भटकतें रहलियै । आहिस्ता-आहिस्ता साँझकों धुंधलका अन्हरिया रातों में बदलवों शुरू भै गेलै । हुन्नें भूखों सें हमरों सिनी के हालतो विचित्र होलों जाय छेलै ।

ऊ तें खैर मनावों कि नजदीके एक-ठो गाँव दिखी गेलै । ऊ रात हमरा सिनी कें वहें छोटों रं के गाँव में गुजारै लें पड़लै । एकदम भोरे भोर हम्में नदी दिश रवाना होलियै आरो ई देखी हमरों खुशी के ठिकानों नै रहलै कि वहाँ शेर के निशान मौजूद छेलै । हम्मू लोगों कें इकट्ठा करलां । मुंशी हमरा विश्वास दिलैलकै कि हमरा सिनी बेशक वहें आदमखोर शेर के पीछू-पीछू छियै । ऊ शेर के क्रिया-कलाप देखै लें लोगों कें ऊच्चों-ऊच्चों गाछी पर बिठाय देलों गेलै । थोड़ों आरो आगू बढ़ला पर चिड़िया सिनी के चहचहैवों सुनाय पड़लै, आरो हमरों हाथियो रुकी-रुकी कें ठोकर देवों शुरू करलकै ।

हमरा शेर के मौजूदगी के अन्दाज लगावै में दरे नै लगलै । महावतें कहलकै कि जामुन के झाड़ी में हमरा शेर के मौजूदगी के आभास होय रहलों छौं । हौदा में कुछ पत्थरो छेलै । महावतें एक पत्थर झाड़ी बीच फेकलकै आरो ठिक्के में, पत्थर के गिरत्हैं शेर उछललै, आरो दहाड़तें निकली भागलै। मतरकि ओकरा भागै के रास्ता में हाथी नजर ऐलै तें वैं पलटी कें हमरा पर हमला लें देह-हाथ समेटें लागलै । ई सब पलक झपकतैं होलों छेलै । मजकि हम्मुओ तैयारे छेलां । अभी ऊ शेर लगभग बीस गज के दूरिये पर होतै आरो हम्में गोली चलैये वाला छेलियै कि हमरों हाथी हठाते पलटी गेलै । यै सें हमरों रुख दूसरों दिश होय गेलै । मजकि जल्दिये हमरा हाथी के पलटवों के रहस्य मालूम होय गेलै । असल में हमरों साथ एलों कै एक ठो भयभीत आदमी हाथी सें सट्टी गेलों छेलै आरो दू ठो ओकरों पुछड़िये सें लटकी गेलों छेलै । खैरियत यहें होलै कि हमरों बन्दूक नीचें गिरै सें बची गेलै । हाथी

आरो शेर दोनों एक सेकेण्ड लेली हक्का-बक्का रही गेलै ।

हठाते हौ सब परिस्थिति के असर हमरौ पर पड़लै । हालांकि आपनों निजी जिन्दगी में ढेरे जानलेवा दिक्कतौ के सामना करलें छेलियै । सच पूछों तें जोखिम कें उठैवों आरो जान खतरा में डालै के एक तरह सें हमरा अभ्यासे होय गेलों छेलै, मतरकि चाहे तोहें हमरा कमजोर या कायर कहों, अइयो ऊ क्षण कें याद करत्हैं हमरों रोंगटा खड़ा होय जाय छै । तोहें जरा सोचों—हौदा, महावत, शिकारी आरो शिकारी सें नीचें हाथी सें लिपटलों होलों आदमी आरो शिकार के दरम्यान मुश्किल सें कुछ गज के दूरी । शिकारो केन्हों—आदमखोर शेर ।

कि एकाएक शेर उछललै आरो हाथी के पुट्ठा पर पंजा जमाय देलकै । हमरों सम्मुख मृत्यु खूंखार जबड़ा आरो भयानक पंजा के शक्ल में उपस्थित छेलै ।

हौ खूंखार जबड़ा आरो भयानक पंजा केकरो दिल दहलाय दै वास्तें काफी छेलै । जों हमरा दोनों के बीच के दूरी आरो कुछ कम होतियै तें हौ दिन शिकारिये शिकार होय गेलों होतियै ।

हाथी सधैलों होलों छेलै । तहियो तकलीफ आरो डर सें बेचैन हुऍ लागलों छेलै । तखनी ई सोचै आरो फिकिर करै वक्त नै छेलै । हम्में वहें कम समय में जबें कि हमरों आरो मौत के बीच बस एक गज के दूरी बची रहलों छेलै, बन्दूक के नाल शेर के सिर सें लगाय कें लबली दबाय देलियै । शेर तें आलू के पौधा रं नीचें गिरी पड़लै । आरो हाथी आपनों गुस्सा उतारै के गरज सें झटाक सें आपनों गोड़ ओकरों बेजान शरीर पर राखी देलकै ।

हमरा याद छै, हौ शेर कै एक फीट लम्बा छेलै । ओकरों कपाड़ों पर पूर्णिमा चांद जेहनों कोय निशान नै छेलै, जेन्हों कि लोग ओकरों बारे में बोलै छेलै आरो नै ओकरा में हेनों कोय खास बाते छेलै, जे जे ओकरों बारे में प्रचलित छेलै । ऊ तें बस एक शेर छेलै । जे हुऍ, हौ हाथी कें हम्में नै भूलें पारौं । बहुत दिनों के बाद ऊ हाथी पर हम्में एक ठो कविता लिखलें छियै, सुनों,

टुकढुम-टुकढुम हाथी राम
तोरों सवारी बिना लगाम ।
सूँढ़ लटकलों अजगर रं

चमड़ो तोरों पत्थर रं
दाँत दुधे रं चम-चम-चम
खाना मोंन भरी, नै कम
पर टुकनी रं आँखे जाम
टुकदुम-टुकदुम हाथी राम ।
पेट छेकौं या छेकौं पहाड़
गोड़ छेकौं या गाछे ताड़
लगौं डमोलों तोरों कान
तोरों मालिक बस पिलवान
सब बुतरू रों तोरा सलाम
टुकदुम-टुकदुम हाथी राम ।

हौ साँझ मौसम बड्डी अच्छा छेलै । अवधेश सिंह, शशिभूषण खडगाहा, डॉ. उमेश राय, सुभाष सिंह, चक्रधर सिंह आरो कैएक ठो लोग खालिक चा लुग बैठलों होलों छेलै । हम्में जबें हुनकों लुग पहुँचलियै तें बिस्कुट आरो चाय के दौर शुरू होय चुकलों छेलै ।

हम्में खालिक चा कें अच्छा मूडों में देखलियै तें कहलियै, ''तोरों जिन्दगी में तें शिकारे शिकार छौं । शेरो तक के शिकार तोहें करलौ, की कभी भालुओ के शिकार करलें छौ ।'' तखनी खालिक चा आराम कुर्सी पर बैठलों छेलै । हमरों सवाल सुनत्हैं हुनी संभली कें बेठी गेलै । हम्में देखलियै—हुनकों आंखों में एक रोशनी नाँखी चमक आवी गेलों छेलै । तबें हुनी कहनौ शुरू करलकै—

''हौ दिनां हम्में चन्दई गांव में छुट्टी बिताय रहलों छेलियै । एक रात के बात छेकै कि भालू छाया नांखी हठाते आवी गेलै आरो हमरों व्यापारी मेहदी मियां के बकरी मारी गेलै । ऊ भालू बकरी कें बड़ी भयानक ढंगों सें चीरी-फाड़ी देलें छेलै । मतरकि खैलें जरियो टा नै छेलै ।

खालिक चां हुक्का गुड़गुड़ावें लागलै, जेना याद के दुनियां में लौटी रहलों रहें । ई देखी हमरा सिनी आरो उत्सुक होय गेलियै ।

खालिक चाखं कहना शुरू करलें छेलै, ''हौ भालू एक कारों बादर नांखी ऐलों छेलै । वैं हवा में कुछ सूंघलें छेलै । कुछ देर लें हिन्नें-हुन्नें घूमलों छेलै आरो माहौल कें आपनों लायक बुझी कें बाड़ी में घुसी गेलों छेलै। फेनू एत्तें खामोशी सें वै बकरी कें चीरी-फाड़ी देलें छेलै कि ओकरों आवाजो कोय नै सुनें पारलें छेलै । ई भालू के स्वभावे छेकै ।'' खालिक चां हुक्का सें फेनू एक कश खीची कें कहना शुरू करलकै ।

दोसरों दिन भोर होत्हैं हमरा सिनी नाश्ता करलियै आरो बराबर पहाड़ दिश चली पड़लियै । हम्में छेलियै, महमदी मियां छेले आरो ओकरों पालतू कुत्ता छेलै । हमरा सिनी ऊ भालू के निशान तलाशतें जंगल रों दक्खिनी हिस्सा पार करी गेलियै, यहाँ तक कि ऊ हिस्सा तांय निकली ऐलियै, जहाँ कि कटीला धार वाला घास उगलों छेलै ।

तलाशी में गरमी आवें लागलों छेलै । आखिर में हम्मू ओकरा पाविये लेलियै । घास के शृंखला जहाँ पर खतम होय छेलै, ओकरों दायां दिश तालाब छेलै आरो तालाब के दोसरों किनारी पर भालू बैठलों नजर आवी गेलै । तालाब में बहुत्ते मुर्गावी छेलै । सुर्खाबो साफ-साफ नजर आवी रहलों छेलै । महमूदी मियां हमरा इशारा करलकै कि भालू बदला मुर्गाबिये के शिकार करीं । मतरकि हम्में आँखे आँख सें चुप रहै के इशारा करलियै, कैन्हें कि दुख आरो खुशी दै वाला सच्चाई हमरों सम्मुखे छेलै ।

कुत्तां जबें भालू कें देखलकै तें, ऊ भूंकतें आरो दौड़तें ओकरों नगीच पहुँची गेलै । हम्मूं पीछू-पीछू लपकलां । तोरा सिनी जानी लें कि कुत्ता भालू कें उलझावै में बड़ी मददगार सिद्ध होय छै । मजकि ऊ वक्ती तें सौंसे मामलाहे उल्टा नजर आवी रहलों छेलै । कुत्ता कें भौंकतें देखी कें भालू दौड़तें हमरों दिश आवें लागलै । भालू के ई प्रकृति छेकै कि जबें दौड़ै छै तें बहुत तेज दौड़ै छै । आबें ऊ हमरा सें ज्यादा दूर नै रही गेलों छेलै । देखत्हैं-देखत्हैं ऊ हमरों करीब आवी गेलै । हम्मू एक मिनट बिना बर्बाद करलैं बन्दूक सें फायर करी देलियै । मतरकि हमरा की मालूम कि कोय वजह सें बन्दूक जाम होय चुकलों छेलै । यही सें फायर नै होलै । दोबारा लबली दबैलियै तें बस क्लिक के आवाजे होय कें रही गेलै ।

हौ स्थिति में हम्में सोचलियै कि कैन्हें नी बन्दूक के कुन्दे सें ऊ भालू पर हमला करी दौं, फेनू यहू सोचलियै कि भालुवे कें आपनों दिश सें जे करना छै, करें दौं । फेनू नै होतै तें भागी जैवै ।

ई सब बात बस बीस-तीस सेकेण्ड में होय गेलों छेले, मतरकि हमरा हेने मालूम होय रहलों छेलै, जेना घण्टो गुजरी चुकलों छै ।

कि एकाएक भालू हमरों दिश बढ़लै । हम्में दम साधले खड़ा रहलियै, आरो ऊ जेन्हैं हमरों नगीच ऐलै हम्में आपनों भर कुव्वत बन्दूक के कुन्दा घुमाय कें ओकरों माथा पर दै मारिलयै । भालू हौ रं के हमला वास्तें एकदम्मे तैयार नै छेलै । आरो हमरों हमला बड़ी जोरदार छेलै । हौ उछललै, चीखलै आरो पचास गज के दूरी पर झाड़ी सिनी छेलै, जेकरै में जाय कें घुसी गेलै ।

हम्में पीछू मुड़ी कें देखलियै तें देखलियै कि मेहदी मियां गायब छै आरो हुनकों कुत्तो तांय नजर नै ऐलै ।

हमरों जान बची चुकलों छेलै । हम्में ईश्वर कें धन्यवाद देलां । ऊ सचमुचे में हमरों लें मौते के घड़ी छेलै । बन्दूक धोखा दै चुकलों छेलै आरो मेहदी मियां आपनों कुत्ता सहित लापता छेलै ।

जबें हम्में जंगल के रास्ता सें लौटें लागलियै तें, एक गाछी के नीचें मेहदी मियां के कुत्ता नजर ऐलै आरो मेहदी मिया वहें गाछी के ऊपर छुपलों बैठलों छेलात । आरो बुतरु नांकी कविता गुनगुनैवो करी रहलों छेलात,

भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड-गुड
जहिया सें घूमी ऐलों छै
लंदन आरो हॉलीवुड
बात करै नै केकरौ सें भी
खाली कहै छै
सी केन कुड
ही केन कुड
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड ।
चश्मा सदा चढ़ैले राखै
हाथों में छोटका इस्टिक
झबरों-झबरों लातों सें

ढेलों-ढेपों कें मारै किक
खोलै नै टाई कें कभियो
या माथों सें आपनों हुड
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड ।

हमरा जिन्दा सलामत देखलकै तें जल्दी सें नीचें उतरी ऐलात ।

''तोहें की बुझी रहलों छेलौ, हम्में भालू के कलव्वों बनी जैवै ?'' हम्में मुस्कैतें कहलियै तें मेहदी मियां बड़ी गंभीरता आरो परेशानी में कहलकै ''मतरकि तोहें बची केना गेलौ ।''

''कायर लोग ई राज कें नै समझें पारें ।'' मुस्कैतें मुस्कैतें कहलियै ।

''हम्में कायर नै छौं । बस तखनी भागिये ऐवों में सलामती बुझैलै ।''

ई सब सुनी कें हमरों मूड क्षणै-क्षणै खराब होलों जाय रहलों छेलै, से हम्में चुप्पी साधी लेलियै ।

हमरों मूड के शायत मेहदी मिया कें इलम नै छेलै, यहें सें फेनू पूछी बैठलै, ''तें तोहें की ऊ भालू के पीछा नै करलौ ?''

''केना करतियै, बन्दूक एक्के छेलै आरो वहू खराब ।'' हम्में आपना पर काबू रखतें कहलियै ।

हम्में ई शिकार पर रायफल लै कें नै गेलों छेलियै । हमरों जिन्दगी के ई पहिलों शिकार छेलै जे हमरों पकड़ में आवियो कें जीत्तों निकली गेलों छेलै । एकरों अफसोस हमरा आय तक छै ।

हौ शाम में सर्दी कुछ ज्यादाहै छेलै । हमरों साथें आरो कुछ लोग खालिक चा के वकालत खाना में बैठलों होलों छेलै । आरो सब कन जे ड्रायंग रूम होय छै, जहाँ लोग बाग आवी कें बैठै छै, ऊ ड्रायंग रूमें कहलाय छै, मजकि खालिक चा के ड्रायंग रूम वकालत खाना सें ज्यादा कुछ नै छेकै । खालिक

चा मोटों-मोटों कानूनी किताबों के बीचों में बैठै छै आरो ऊ कमरा के हुनी वकालत खाना कहै छै । कानून के सब जुड़लों कागज पत्तर मोटों-मोटों किताब सब वही कमरा में रखलों रहै छै । बस यहें कोठरी हुनकों वास्तें ड्रायंग रूम छेकै । कचहरी खुल्ला रहै छै तें कानून के कागज पत्तर लैकें हुनी कचहरिये दौड़तें रहै छै । मजकि तखनी कचहरी बन्द चली रहलों छेलै । से एक दिन शिकार के कहानी सुनै के ख्यालों सें हुनकों यहाँ पहुँची गेलियै ।

कहलियै, ''चाचा हो दिन भालू के शिकार के जे घटना सुनैलें छेलौ, मजा नै ऐलौं ।''

''कैंन्हें ?'' हमरों बात सुनत्हैं खालिक दा संभली कें बैठी गेलै ।

''नै जानौं कैन्हें ।'' हम्में कहलियै ।

''अच्छा तें आय हम्में भालुवे के शिकार के कहानी सुनावै छियौं, सुनों, एकरा कहानी नै बुझियों, एक बितलों घटना छेकै । तोरा सब तें जानवे करै छौ कि बराबर के पहाड़ो जंगल सें घिरलों होलों छेलै आरो वहाँ भालू बहुत्ते पैलों जाय छेलै । ऊ पहाड़ तक जाय वास्तें बेला स्टेशनें पर उतरै लें पड़ै छै । रास्ता घुमावदार छै । हौ समय में हम्में अफसरा गाँव गेलों होलों छेलियै । कि मखदमपुर सें हमरों एक रिटायर्ड आरक्षी निरीक्षक दोस्त नें कहलाय भेजलकै कि शिकार पर चलना छै । हिरण के शिकार के इच्छा हमरो छेलै । सोचलियै—दोनों शिकार एक्के साथें होय जैतै ।

दोसरे दिन हमरा सिनी अफसरा सें रवाना होय गेलियै आरो अलीगंज पहुँची गेलियै । यहीं रुकी कें शिकार में निकलै के योजना छेलै । वहाँ गिर्दोनोह में पथरीला चट्टाल रों सिलसिला फैललों छेलै, जैमें जग्घों-जग्घों पर खोह आरो खाईयो छेलै, जैमें जरूरत पड़ला पर भालू साथें दोसरों-दोसरों दरिन्दा शरण लै छेलै ।

अगला भोर सूरज उगै सें पहिलैं हमरा सिनी शिकार लेली तैयारी शुरू करी देलियै । बन्द गिलाफ सें बन्दूक कें निकाली साफ करलियै । कारतूस कें अजमैलियै । चाकू के धार तेज करलियै आरो फेनू निकली पड़लियै । जंगल वहाँ सें कोय तीन मील रों दूरी पर छेलै ।

जंगल पहुँची कें हमरा सिनी सबसें पहिले एक झबरलों ऊच्चों गाछी पर मचान बंधवैलियै आरो हुन्नें हाँका करै वाला साजो समान के तेयारी में लगी गेलै । हमरों पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट दोस्त मुजाहिद खान के

सेवक सिनी नें बड़ी कारिगरी आरो खूबसूरती सें सब तैयारी पूरा करलकै । हम्में आरो मुजाहिद खां नें मचान पर आसन जमैलियै आरो हुन्नें हाँका करै वालां आपनों काम शुरू करी देलकै । ऊ सब जंगल के भीतर घुसी गेलों छेलै आरो दू-तीन मील भीतर गेला रों बाद घेरा डाली हमरा सिनी दिश बढ़ें लागलै ।

थोड़े देर बाद दूर सें ऐतें शोरगुल हमरा सिनी कानों में पड़लै तें, है जानी लेलियै कि मजदूर आरो नौकर सिनी आपनों काम शुरू करी देलें छै। ढोल पीटै आरो नारा लगैवों के आवाज आहिस्ता-आहिस्ता हमरा सिनी के करीब ऐलों जाय छेलै ।

कि एकाएक पदचाप सुनाय पड़लै । सुनत्हैं हमरा सिनी चौकन्ना होय बैठी गेलियै । तभिये एक ठो मजदूर के हाँक सुनाय पड़लै—''भालू आवी रहलों छै, भालू आवी रहलों छै ।''

कुछुवे देरी में हम्में देखलियै कि मोटों-ताजा भालू झाड़ी सें झूमतें निकली रहलों छै । ऊ हमरों बन्दूक के सिमाना पर छेलै । हम्में जल्दिये निशाना बांधलियै आरो लबली दबाय देलियै । फेनू की छेलै, गोली भालू के जबड़ा कें तोड़तें निकली गेलै । गोली लगत्हैं ऊ पीछू आवी रहलों एक ठो मजदूर पर झपटी पड़लै । हमरा दोसरों गोली चलावै के मौके नै मिललै । भालू कें हो रं झपटतें देखी कें मजदूरें भागै के कोशिश करलकै, मतरकि भालू के तेज रफ्तार के मुकाबला भला मजदूर की करतियै ।

भालू के गरम-गरम साँस के अनुभव मजदूरें जबें आपनों गालों पर करलकै तें, वैं बड़ी फुर्ती सें कलाबाजी खैलकै । मतरकि दुर्भाग्य, मजदूर के एक गोड़ झाड़ी में फंसी गेलै आरो जबें तांय ऊ संभलतियै, भालू ओकरों ऊपर छेलै ।

भालू कें हमरों गोली लगला के कारण मजदूर कें एक फायदा तें जरूरे पहुँचलों छेलै कि भालू आपनों घायल जबड़ा के वजह सें आपनों मुँह आरो दाँत नै चलावें पारी रहलों छेलै । मतरकि भालू के पंजाहै आदमी कें झंझोड़ी दै लें काफी होय छै ।

हम्में आरो मुजाहिद खां हाथों में बन्दूक लेलें बेबस बैठलों छेलियै। गोली चलैला सें मजदूर के जान कें खतरा छेलै, होनौ कें ऊ मजदूर खतरा में छेलै । भालूं ओकरा आपनों गिरफ्त में लैकें एक गेंद नाँखी हिन्नें-हुन्नें

करी रहलॉ छेलै । मतरकि वहू मजदूर बड़ा तजुरबाकार आरो हिम्मतवाला छेलै । शायत ऊ कसरतो करतें होतै आरो ओकरा कुछ दाँव-पेंचों के ज्ञानो छेलै, कैन्हें कि देखत्हैं-देखत्हैं वैं आपनॉ टाँग कें कैंची बनाय, भालू के गर्दन में डाली देलकै । आरो दायां हाथ सें ओकरॉ जख्मी मूँ पकड़ी कें धड़ाधड़ घूंसा बरसाबें लागलै ।

एत्तें भयानक आरो दिलचस्प दृश्य हम्में आय तक नै देखलें छेलियै । भालू बड्डी ताकतवर छेलै । वैं आपनॉ पूरा कुव्वत सें मजदूर कें धकेली रहलॉ छेलै । जमीनॉ पर रगड़ियो रहलॉ छेलै—साथे-साथ गर्दनो छुड़ाय के कोशिश करी रहलॉ छेलै ।

मजदूर मौत रॉ करीब छेलै । यही लें जी-जान सें वैं दुश्मन पर हमला करलें जाय रहलॉ छेलै । होना कें ओकरॉ दोनों कंधा जख्मी होय चुकलॉ छेलै, जैसें खूनो बहें लागलॉ छेलै ।

हम्में बेचैनी के हालत में मचान सें नीचू उतरलियै । होनाकें नीचें उतरै सें हमरा मुजाहिद खां नें रोकै लें चाहलकै, मतरकि मजदूर केरॉ बहादुरी आरो ओकरॉ जान खतरा में देखी हम्में बिना देर करले, आपना कें कुछ करै मजबूर पैलियै ।

नीचें उतरी कें हम्में चाकू मजबूती सें पकड़लियै आरो हौले-हौले ऊ दोनों दिश बढ़ें लागलियै ।

नगीच आवी कें भालू रॉ पेट कें निशाना बनैलियै आरो आपनॉ सब्भे टा कुव्वत सें ओकरॉ पेटॉ पर एक के बाद दोसरॉ प्रहार करें लागलियै ।

देखत्हैं-देखत्हैं मजदूर ओकरॉ चंगुल सें बाहर निकली ऐलॉ छेलै । आरो भालू हिन्नें-हुन्नें चीख मारतें दौड़ी रहलॉ छेलै ।

भालू के ऊ हालत देखी हमरा रहलॉ नै गेलै आरो हम्में आपनॉ बन्दूक के गोली सें ओकरा ओकरॉ दुख सें त्राण दै देलियै ।

भालू के ई रोमांचक शिकार सुनी कें हमरा सिनी खालिक चाचा के बहादुरी, दिलेरी के तारीफ करना शुरू करलियै तें, हुनी हठाते गंभीर होय उठलै । हमरा सिनी है परिवर्त्तन के कारण कुछुवो नै समझें पारलियै । पूछौ के साहस नै होय छेलै—हठाते ई की बात भै गेलै ।

कुछ क्षण लेली चुप रहला के बाद खालिक चाचां बड़ी गंभीर होतें

कहलकै, ''लेकिन बहादुरी आरो दिलेरी आबेॅ चीता, शेर, भालू के शिकार करै में नै छै, एकरा बचावै में छै । राजा-रजवाड़ा आरो हमरोॅ जेहनोॅ शिकारी के शौक के कारणें आय देश में एकेक करी केॅ जंगली पशु आरो अजीब अजीब किस्म के पक्षी के जाति या तेॅ खतम होय गेलोॅ छै, आकि खत्म होय पर छै । कभी हमरोॅ अंगप्रदेश सिंह हेनोॅ वनराज के घोॅर छेलै, ऊ आपने घरोॅ में नै दिखाय पड़ै छै । चीता, भालू, बाघ हाथी की-की नै मन्दार, लक्ष्मीपुर, मधेपुरा, राजमहल के जंगल पहाड़ में मिलै छेलै । आय सब जंगल पहाड़ सूनोॅ छै । जंगलें पहाड़ नै रहलै तेॅ जंगली जीव-जन्तु कहाँ सें रहतै ।

पहिले हमरा सिनी जंगली जीव-पशु केॅ खतम करलियै, फेनू जंगल आरो फेनू पहाड़ो तोड़ी केॅ राखी देलियै । हमरोॅ हवस चीता, शेर आरो भालुओ सें भयानक बनी गेलोॅ छै । आय जरूरत छै—ई हवस केॅ गोली मारी दै के । आवेॅ हमरा सिनी के ई हवस के शिकार करना छै । यही लेॅ देखै छौ नी, हम्में ई बन्दूक आरो राइफल केॅ काठ के बक्सा में हमेशा लेली बन्द करी दीवाली पर टांगी देलेॅ छियै ।

हमरा सिनी देखलियै, सचमुचे में काठ के दू लम्बा-लम्बा बक्सा दीवाली पर टंगलोॅ होलोॅ छेलै ।

आरो एकरोॅ बाद नै हम्में, नै हमरोॅ साथियें कभियो खालिक चाचा सें शिकार के कहानी सुनाय के जिद करलियै, नै आरजू-मिन्नत ।

■■■